

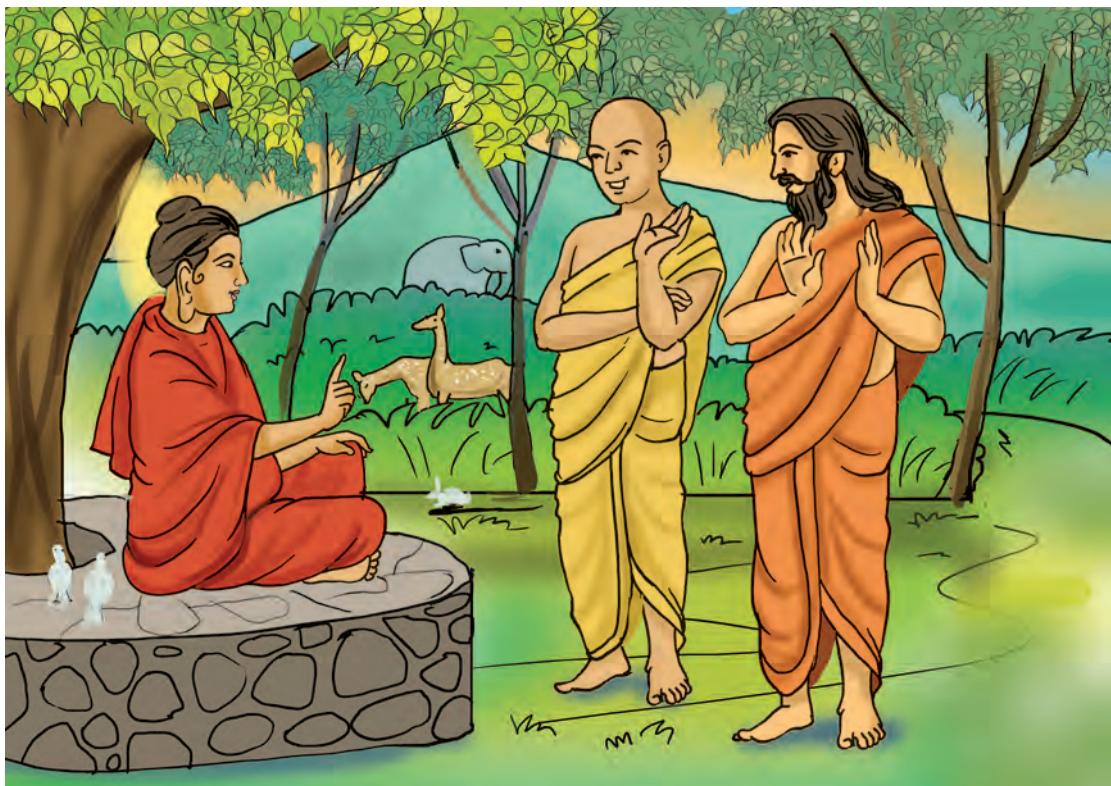
## २. वासेद्वसुतं

### प्रस्तावना

‘वासेद्वसुतं’ हे तिपिटकातील सुतपिटकाच्या अंतर्गत येणाऱ्या सुतनिपात या ग्रंथातून घेतले आहे.

एकदा तथागत बुद्ध इच्छानंगल उपवनात विहार करत असतांना तेथे भारद्वाज व वासेद्व हे दोन मित्र चर्चा करत असतांना, ब्राह्मण कसा होतो? ब्राह्मण कोणाला म्हणावे? श्रेष्ठत्वाचे लक्षण कोणते? इत्यादीवर वाद निर्माण झाला. ते दोघेही एकमेकांची समजूत घालू शकले नाहीत. तेव्हा ह्या प्रश्नांचे उत्तर मिळविण्यासाठी ते दोन्ही माणवक तथागत बुद्धाकडे आले. त्यांना बुद्धाने दिलेल्या उत्तराचे वर्णन यात आले आहे.

जातिवाद, जातिभेद हा भारतातील एक अतिशय गंभीर प्रश्न मानला जातो. या विषयी भारतातील अनेक महापुरुषांनी आपापले विचार व्यक्त केलेले आहेत. त्या जातिप्रथेच्या विरोधात तथागत बुद्धाने ठिकठिकाणी आपले विचार व्यक्त केलेले आहेत. त्यापैकी जातिभेद खंडणाचा व अस्पृश्यता निवारण्याचा हा एक नमुना वासेद्व सुतात पाहायला मिळतो.



तेसं नो जातिवादस्मि, विवादो अत्थि गोतमं।

जातिया ब्राह्मणो (ब्राह्मणो) होति, भारद्वाजो' ति भासति।

अहं च कम्मुना ब्रूमि (बूमि), एवं जानाहि चकखुमा ॥१॥

तेन सक्कोम सञ्जतुं, अञ्जमञ्जं मयं उभो ।  
भगवन्तं पुद्मागमा, सम्बुद्धं इति विस्सुतं ॥२॥

जातिया बाह्यणो (ब्राह्मणो) होति, उदाहु भवति कम्मना।  
अजानतं नो पबूहि, यथा जानेम् बाह्यणं (ब्राह्मणो)'' ॥३॥

तेसं वो' हं व्याकिखस्सं (वासेद्वाति भगवा) अनुपुब्बं यथातथं।  
जाति विभं पाणानं, अञ्जामञ्जा हि जातियो ॥४॥

तिणरुक्खे' पि जानाथ, न वा पि पटिजानरे।  
लिंग जातिमयं तेसं, अञ्जमञ्जा हि जातियो ॥५॥

ततो कीटे पतंगेन च, याव कुन्थ किपिल्लिके।  
लिंगं जातिमयं तेसं, अञ्जमञ्जा हि जातियो ॥६॥

चतुर्पदे' पि जानाथ, खुद्दके च महल्लके ।  
लिंगं जातिमयं तेसं, अञ्जमञ्जा हि जातियो ॥७॥

ततो मच्छे' पि जानाथ, उद्दके वारि गोचरे।  
लिंगं जातिमयं तेसं, अञ्जामञ्जा हि जातियो ॥८॥

ततो पक्खी' पि जानाथ, पत्तयाने विहंगमे।  
लिंगं जातिमयं तेसं, अञ्जामञ्जा हि जातियो ॥९॥

यथा एतासु जातीसु, लिंगं जातिमयं पुथु।  
एवं नथि मनुस्सेसु, लिंगं जातिमयं पुथु ॥१०॥

यो हि कोचि मनुस्सेसु, गोरक्खं उपजीवति।  
एवं वासेद्व जानाहि, कस्सको सो न बाह्यणो (ब्राह्मणो) ॥११॥

यो हि कोचि मनुस्सेसु, वोहारं उपजीवति।  
एवं वासेद्व जानाहि, वाणिजो सो न बाह्यणो (ब्राह्मणो) ॥१२॥

यो हि कोचि मनुस्सेसु, अदिन उपजीवति।  
एवं वासेद्व जानाहि, चोरो एसो न बाह्यणो (ब्राह्मणो) ॥१३॥

यो हि कोचि मनुस्सेसु, इस्सत्थं उपजीवति ।  
एवं वासेद्व जानाहि, योधाजीवो न बाह्यणो (ब्राह्मणो) ॥१४॥

यो हि कोचि मनुस्सेसु, गामं रद्दं च भुज्जति।  
एवं वासेद्व जानाहि, राजा एसो न बाह्यणो (ब्राह्मणो) ॥१५॥

यो दुक्खस्स पजानाति, इधेव खयमत्तनो ।  
पन्भारं विसंयुतं, तमहं बूमि (ब्रूमि) बाह्णो (ब्राह्णो) ॥१६॥

यस्स रागो च दोसो च, मानो मक्खो च पातितो।  
सासपेरिव आरगा, तमहं बूमि (ब्रूमि) बाह्यणं (ब्राह्यणं) ॥१७॥

न जच्चा बाह्यणो(ब्राह्मणो) होति, न जच्चा होति अबाह्यणो (अब्राह्मणो)  
कम्मुना बाह्यणो(ब्राह्मणो) होति, कम्मुनाहोति अबाह्यणो (अब्राह्मणो)||१८||

कस्सको कम्मुना होति, सिप्पको होति कम्मुना ।  
वाणिजो कम्मुना होति, पेस्सको होति कम्मुना॥१९॥

तपेन ब्रह्मचरियेन (विसुद्धाचरियेन), संयमेन दमेन च ।  
एतेन बाह्यणो(ब्राह्मणो) होति, एवं बाह्यणमुत्तमं(ब्राह्मणमुत्तमं) ॥२०॥

## (सुत्तनिपात – आवश्यक फेरफार करून)

शब्दार्थ

- |                      |                            |                          |                             |
|----------------------|----------------------------|--------------------------|-----------------------------|
| विवाद (वि. पुलि.)    | - भांडण, कलह, झगडा, विवाद  | पक्खी (पू.)              | - पक्षी                     |
| जाति (स्त्री.)       | - जन्म                     | पुथु (अ.)                | - वेगवेगळा, पृथक            |
| भासति (क्रि.)        | - बोलतो, चमकतो             | गोरक्ख (पू.)             | - गुराखी                    |
| कम्मुना (वि.)        | - कर्मने                   | उपजीवति (क्रि.)          | - परोपजिवी, परावलंबी        |
| चक्खुमा (वि.)        | - डोळस, जाणकार             | अदिन्न (वि.)             | - न दिलेले                  |
| अञ्जमञ्ज (वि.)       | - परस्पर, एकदुसऱ्याशी      | योधाजीवो (पू.)           | - सैनिक                     |
| सञ्जत्तुं (कृ.)      | - प्रेरित, सूचित           | भुज्जति (वर्त.प.पू.ए.व.) | - खातो                      |
| पटुमागमा (कृ.)       | - प्रश्न विचारण्यासाठी आले | पजानाति (क्रि.)          | - स्पष्टरूपाने जाणतो        |
| अजानतं (नपू.)        | - न जाणता                  | खयमत्तनो (वि.)           | - नाश जाणतो                 |
| व्याक्खिस्स (क्रि.)  | - सांगितले                 | विसंयुत्तं (कृ.)         | - वेगळा केला, जोडला नाही    |
| तिण (नपू.)           | - गवत, तृण                 | आरण्गा (नपू.)            | - सुईचे टोक                 |
| पतंगेन (पू.)         | - (पक्षी) पक्ष्याने        | सिप्पिको (पू.)           | - शिल्पकार, कलाकार          |
| किपिल्लिके (स्त्री.) | - जन्म                     | पेस्पको (पू.)            | - प्रेषक, पाठवणारा, एक जाती |
| चतुर्पदे (पू.)       | - चार पायांचा (पशु)        | संयमेन (वि.)             | - संयमाने                   |
| मच्छ (पू.)           | - मासा                     | दमेन (नपू.)              | - दुमाने, संयमाने           |

स्वाध्याय

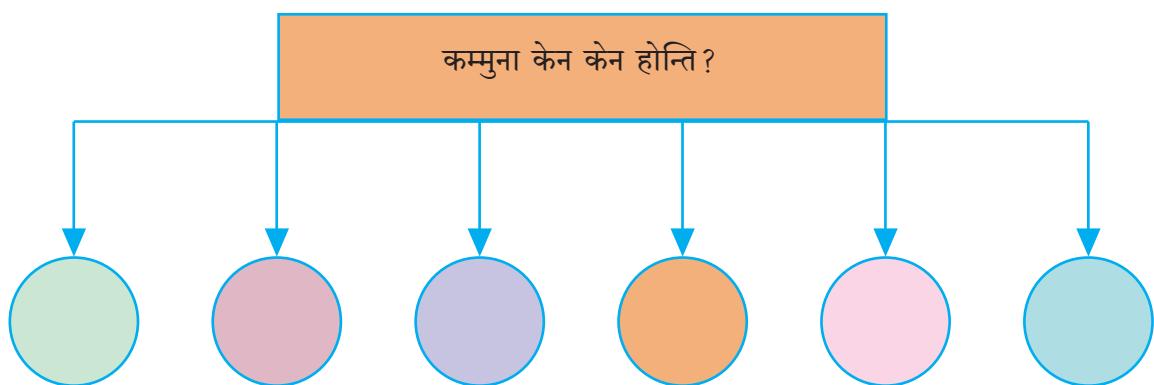
१. खालील गाथांच्या आधारे रेखाजाळे पूर्ण करा.

न जच्या बाह्यणे(ब्राह्मणे) होति, न जच्या होति अबाह्यणे(अब्राह्मणे)।

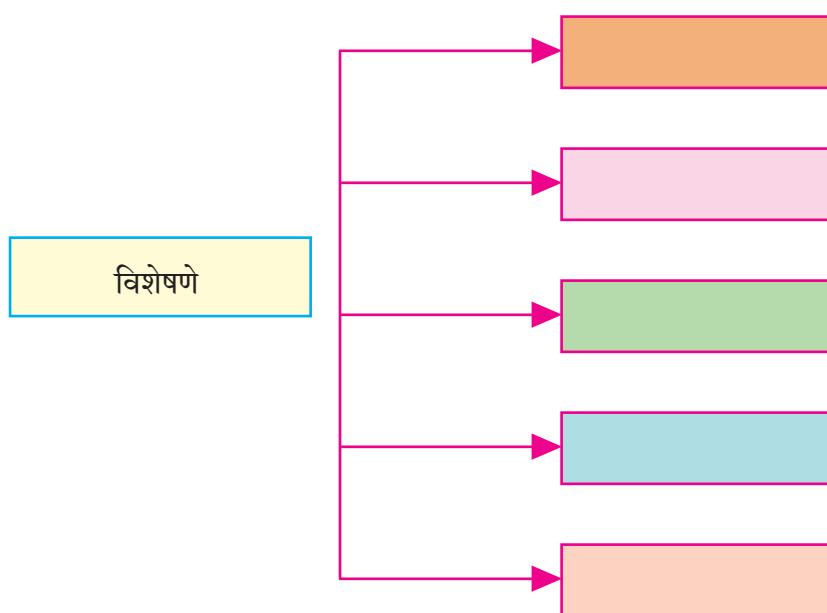
कम्मुना बाह्यणो(ब्राह्मणो) होति, कम्मुना होति अबाह्यणो(अब्राह्मणो)||

कस्सको कम्मुना होति, सिप्पको होति कम्मुना।

वाणिजो कम्मुना होति, पेस्सको होति कम्मुना ॥



## २. पाठातील पाच विशेषणे शोधून लिहा.



### ३. दीर्घोत्तरी प्रश्न.

वासेटुसुत्ताचा सारांश तुमच्या शब्दात लिहा.

